# कैदियों के लिए उच्च शिक्षा – इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की एक पहल

भानु प्रताप सिंह*

**इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय जिसे इग्नू के नाम से भी जाना जाता है, के कार्यक्रम समाज के विभिन्न वर्गों के शिक्षार्थियों की शैक्षिक ज़रूरतों को पूरा करते हैं। इन विद्यार्थियों में व्यावसायिक रूप से योग्यता प्राप्त विशेषज्ञ, जेल में बंद अपराधी प्रबंधक, सभी स्तरों के अध्यापक और स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात शिक्षा ग्रहण करने के इच्छुक आम लोग शामिल हैं। विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे सभी शैक्षिक कार्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) और देश की अन्य सभी संवैधानिक परिषदों, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (ए.आई.यू.) तथा इसी प्रकार के अन्य अंतर्राष्ट्रीय निकायों से मान्यता प्राप्त हैं। अपने बहुआयामी कार्यक्रमों के माध्यम से इग्नू ने हर उस व्यक्ति को शिक्षा पाने का मौका दिया है, जो परिस्थितिवश या अन्य कारणों से सामान्य सिस्टम से शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। संस्थान के कार्यक्रम न्यूनतम खर्चे में ही छात्र के लिए उपलब्ध हैं और देश भर में व्यवस्थित नेटवर्क के माध्यम से इसे हर शख्स तक उपलब्ध कराने की उत्तम व्यवस्था भी है, चाहे वह गृहणी हो अथवा जेल में सजा काट रहे कैदी हों।**

भारतीय समाज में शिक्षा, उसके उद्देश्य एवं स्वरूप से जुड़े पक्षों पर निरंतर विचार विमर्श होता रहा है। लेकिन शिक्षा एक व्यापक शब्द है, इसे जीवन से अलग करके नहीं बल्कि सामाजिक जीवन पद्धति में फैली विविधताओं का समावेश कर बहुपयोगी बनाया जाता है। दिन-प्रतिदिन समाज में शिक्षा का बढ़ता महत्त्व, शैक्षिक संस्थाओं के सामने खड़ी तमाम चुनौतियाँ, बढ़ती जनसंख्या और शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता, ऐसे में समाज का एक बड़ा समुदाय जो शिक्षा से वंचित

**सहायक क्षेत्रीय निदेशक*, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, 3/310, मैरिस रोड, अलीगढ़-202001

रहा है, को उच्च शिक्षा प्रदान करने में इग्नू की बढ़ती एवं महती भूमिका को नजरअंदाज़ नहीं किया जा सकता। पारिवारिक महिलाओं, टैक्सी चालकों, उद्योग और कृषि में लगे कामगार, जेल में बंद अपराधियों तथा वे लोग जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा की औपचारिक धारा से मध्य में अलग हो जाते हैं या किसी अन्य कारण से उच्च शिक्षा से बिल्कुल वंचित रह जाते हैं, आदि को उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु संसद के अधिनियम द्वारा सन् 1985 में 19 नवंबर से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) नयी दिल्ली का आरंभ हुआ। इग्नू की स्थापना का मुख्य उद्देश्य था–

- जनसंख्या के उन भागों में उच्च शिक्षा सुलभ कराने की व्यवस्था करना जो इन सुविधाओं से वंचित हो।
- पिछड़े क्षेत्र, पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले छात्रों, गृहणियों, कैदियों आदि जैसे विशिष्ट लक्षित वर्गों के लिए उच्चतर शिक्षा के विशेष कार्यक्रम प्रारंभ कर शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाना।
- लोगों को उनके घरों पर या उनके कार्य स्थल पर सुविधाजनक समय पर शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करना।

भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहलाल नेहरू स्वतंत्रता संग्राम के कारण इलाहाबाद में अक्सर जेल में रहते थे या अन्य आंदोलनों के कारण व्यस्त रहते थे। तब नेहरू जी मसूरी में रह रही अपनी पुत्री इन्दिरा प्रियदर्शनी को पत्र लिखा करते थे। पत्रों की रूपरेखा इस प्रकार रहती थी कि ''जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अक्सर मुझसे बहुत–सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जबाब देने की कोशिश करता हूँ लेकिन अब जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद (जेल) में हम दोनों बातचीत नहीं कर सकते इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी–कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे बड़े देशों की जो इस दुनिया में है, छोटी–छोटी कथाएँ लिखा करूँ।'' इस प्रकार इन्दिरा जी को दूरस्थ शिक्षार्थी (डिस्टेन्स लर्नर) के रूप में देखा जा सकता है। आज भारत देश में 1382 जेल हैं जिनमें 133 केंद्रीय कारागार, 333 जनपदीय जेल, 809 उप कारागार, 44 खुले कारागार, 21 बोर्सटल स्कूल (Borstal school), 30 विशेष कारागार, 19 महिला कारागार, 03 बाल सुधार गृह, सभी जेलों में कुल 372926 कैदी हैं जिनमें 356902 पुरुष कैदी तथा 16024 महिला कैदी हैं। इस बात को लेकर चिंता बढ़ रही है कि मौजूद शिक्षा प्रणाली जेल में बन्द कैदियों के लिए उच्च शिक्षा हेतु अपनी भूमिका ठीक से नहीं निभा रही है, कैदियों की शिक्षा एवं समाज में पुनर्स्थापन हेतु सन् 1994 में इग्नू ने तिहाड़ जेल में इग्नू का अध्ययन केंद्र खोलकर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

## कैदियों के लिए नि:शुल्क शिक्षा की पहल

सन् 1994 से इग्नू कैदियों को विशेष छूट के साथ शिक्षा प्रदान कर रहा है। इग्नू ने कैदियों के लिए नि:शुल्क शिक्षा कार्यक्रम की घोषणा 2010 में की तथा इग्नू ने देशभर में अपने कार्यक्रम में दाखिला लेने के इच्छुक कैदियों के लिए फीस में पूर्ण छूट की घोषणा की। कैदियों को अध्ययन

सामग्री और पुस्तकालय की सुविधा सभी जेलों में इग्नू समन्वयक और सहायक कर्मचारियों द्वारा नि:शुल्क मुहैया कराई जाती है।

शिक्षा के माध्यम से कैदियों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं जिसमें–

- उनका मानसिक तनाव कम हो सके।
- उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके।
- उनमें व्याप्त नकारात्मक विचारधारा को समाप्त किया जा सके।
- व्यवसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा उन्हें स्वरोजगार के अवसर प्रदान किये जा सकें, और
- कैदियों को आत्म–निर्भर बनाया जा सकें।

इस प्रकार इग्नू कैदियों को उच्च, गुणवत्तापूर्ण, सहज एवं सुलभ शिक्षा प्रदान कर निम्न रूप से समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास कर रहा है।

कैदियों के लिए इग्नू की विद्यार्थी सेवा सहायता जेल मूल रूप से अति संवेदनशील एवं उच्च सुरक्षा के क्षेत्र हैं, जहाँ बाहर के व्यक्तियों का प्रवेश निषेध है। अत: जेल अध्ययन केंद्र में इग्नू द्वारा कैदियों को विद्यार्थी सेवा सहायता पहुँचाना किसी चुनौती से कम नहीं होता है। जेल में जहाँ कैदियों से मिलने या जेल में अंदर जाने से आम जनता कतराती है वहाँ इग्नू समीप के अध्ययन केंद्र के परामर्शदाताओं की सहायता एवं जेल प्रशासन के सहयोग से कैदियों के परामर्श सत्रों की व्यवस्था करता है। इग्नू विभिन्न प्रकार से कैदियों को सहायता सेवा प्रदान करता है यथा–

- उच्च शिक्षित कैदियों को शैक्षिक परामर्शदाता के रूप में नियुक्त करके एक समूह तैयार किया जाता है।
- ज्ञान वाणी, ज्ञानदर्शन, रेडियो एवं टी.वी. द्वारा कैदियों के लिए परामर्श सत्रों की व्यवस्था की जाती है।
- इग्नू कैदियों को नि:शुल्क अध्ययन सामग्री प्रदान कराता है, जो इस रूप में लिखी गयी है जिसे कैदी सुविधापूर्वक पढ़कर समझ सकें।
- इग्नू दृश्य–श्रृव्य सामग्री कैदियों को उपलब्ध कराता है, जिससे कैदियों को शिक्षा ग्रहण करने हेतु सहायता मिलती है।
- इग्नू द्वारा टेलीकान्फ्रेंसिंग की व्यवस्था की गयी है जिसमे कैदी इग्नू मुख्यालय के शिक्षकों से अपने प्रश्नों का समाधान प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार कैदियों तक शिक्षा पहुँचाने हेतु इग्नू द्वारा हर संभव प्रयास किए जाते हैं जिससे कैदी शिक्षा ग्रहण करके समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें।

## कैदियों की शिक्षा के उद्देश्य

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति द्वारा इग्नू न केवल आम आदमी को शिक्षा प्रदान कर रहा है वरन् जेल में बंद कैदियों को उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। जेल प्रशासन, भारत सरकार एवं इग्नू के संयुक्त प्रयासों द्वारा 49 जेलों में विशेष अध्ययन केंद्र खोले गए। सबसे पहले 1994 में तिहाड़ जेल में अध्ययन केंद्र खोला गया। विभिन्न जेलों में कैदियो को नियमित रूप से पाठ्यक्रमों की शिक्षा हेतु क्षेत्रीय केंद्र/अध्ययन केंद्र के परामर्शदाता उन्हें शिक्षित करने के लिए प्रतिनियुक्ति पर बुलाए जाते हैं। सभी कैदी जेल में ही सत्रीयकार्य (असाइनमेंट)

पूरा करते हैं और जेल में ही परीक्षाएँ भी देते हैं। इग्नू कैदियों को उनकी मातृभाषा में अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाने की दिशा में भी काम कर रहा है। इग्नू द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों से जेलों में अध्ययन केंद्र खोले गए–

- कैदियों को उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा द्वारा समाज की मुख्य धारा से जुड़ने के अवसर प्रदान करना।
- कैदियों की उच्च शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करके आर्थिक–सामाजिक स्तर बढ़ाना।
- ऐसे कैदियों को उच्च शिक्षा प्रदान करना जो आर्थिक–सामाजिक कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके हों।
- कैदियों को आवश्यकता आधारित कार्यक्रम उपलब्ध कराना जिससे वे रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें।
- कैदियों को इग्नू द्वारा समायोजित कैम्पस प्लेसमेन्ट द्वारा रोजगार के अवसर प्रदान करना।

भारत में कैदियों के लिए इग्नू के जेल अध्ययन केंद्र इग्नू ने देश की 49 जेलों में 28 क्षेत्रीय केंद्रों की निगरानी में विद्यार्थी सहायता केंद्रों (एलएससी) के संस्थापन के ज़रिए समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित कर सामाजिक महत्व का एक बड़ा उदाहरण कायम किया है और इसकी पुष्टि निम्नलिखित तालिका से होती है–

**जेल में अध्ययन केंद्रों की सूची**

| *क्रम. सं.* | *क्षेत्रीय केंद्र* | *जेल अध्ययन केंद्रो की संख्या* | *क्रम. संख्या* | *क्षेत्रीय केंद्र* | *जेल अध्ययन केंद्रों की संख्या* |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | अहमदाबाद | 1 | 15 | करनाल | 2 |
| 2 | आईजॉल | 1 | 16 | खन्ना | 1 |
| 3 | अलीगढ़ | 1 | 17 | लखनऊ | 3 |
| 4 | भोपाल | 9 | 18 | मदुरई | 1 |
| 5 | भुवनेश्वर | 3 | 19 | नागपुर | 1 |
| 6 | चंडीगगढ़ | 2 | 20 | नोएडा | 1 |
| 7 | चेन्नई | 2 | 21 | पटना | 1 |
| 8 | देहरादून | 2 | 22 | पोर्टब्लेयर | 1 |
| 9 | दिल्ली–1 | 1 | 23 | रायपुर | 1 |
| 10 | दिल्ली–3 | 1 | 24 | रांची | 1 |
| 11 | गुवाहाटी | 1 | 25 | श्रीनगर | 1 |
| 12 | जबलपुर | 1 | 26 | शिमला | 1 |
| 13 | जयपुर | 2 | 27 | वाराणसी | 2 |
| 14 | जम्मू | 3 | 28 | भागलपुर | 1 |

उक्त जेलों में इग्नू के अध्ययन केंद्रों पर 1994 से 2011 तक 6579 कैदी नामांकित हो चुके हैं तथा वर्तमान तक यह संख्या 10 हज़ार से ऊपर पहुँच गई है।

## कैदियों के लिए इग्नू के लोकप्रिय कार्यक्रम

सामाजिक या अन्य कई कारणों से आवेश में आकर कई लोग जो आपराधिक कार्य कर देते हैं तथा जेल की सलाखों के पीछे पहुँच जाते हैं ऐसे व्यक्तियों (कैदियों) का निश्चित रूप से उच्चतर शिक्षा प्राप्ति की अपनी इच्छाओं को पूरा करने के वास्ते खोए हुए अवसरों को पुनः पाने का मन जरूर होता है। ये कैदी दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के जरिए अपनी पूर्व व्यावसायिक क्षमता में विस्तार व नवीन ज्ञान प्राप्त करके समाज की मुख्य धारा से जुड़ते हैं। कैदियों के लिए इग्नू ने उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु निम्न लोकप्रिय कार्यक्रम उपलब्ध कराए हैं–

- बैचलर प्रीपरेटरी प्रोग्राम (बीपीपी)
- सर्टिफिकेट इन टूरिज़्म स्टडीज़ (सीटीएस)
- सर्टिफिकेट इन इंफोर्मेशन टैक्नोलॉजी (सीआईटी)
- सर्टिफिकेट इन एचआईवी एंड फैमिली एजुकेशन (सीएएफई)
- सर्टिफिकेट इन न्यूट्रिशन एंड चाइल्ड केयर (सीएनसीसी)
- सर्टिफिकेट इन ह्यूमनराइट्स (सीएचआर)
- डिप्लोमा इन एचआईवी एंड फैमिली एजुकेशन (डीएएफई)
- बैचलर्स इन सोशल वर्क (बीएसडब्लू)
- बैचलर्स इन टूरिज़्म स्टडीज़ (बीटीएस)
- बैचलर्स ऑफ कॉमर्स (बी.कॉम)
- मास्टर ऑफ कॉमर्स (एम.कॉम)
- मास्टर्स इन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन (एमपीए)
- मास्टर्स इन इंगलिश (एमईजी)
- मास्टर्स इन सोशियोलॉजी (एमएसओ)

बीपीपी कार्यक्रम 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके पढ़ना लिखना जानने वाले व्यक्तियों के लिए छः माह का कार्यक्रम है इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी सीधे स्नातक कक्षाओं जैसे बी.ए, बी.कॉम आदि में प्रवेश ले सकता है।

उपर्युक्त कार्यक्रमों को पूर्ण करके कैदी नियमानुसार विभिन्न सरकारी व गैर-सरकारी पदों पर नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। इनमें बी.एस.डब्लू तथा बी.ए.एस. करके सामाजिक क्षेत्र तथा एन.जी.ओ. में रोज़गार के अवसर प्राप्त करते है। बी.काम. करके कैदी वित्तीय सस्थानों बैकों आदि में अवसर प्राप्त कर सकते हैं। मास्टर्स कार्यक्रमों को पूर्ण करके कैदी विभिन्न उच्च पदों पर नौकरी प्राप्त कर सकते हैं।

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त कानून और रूसी तथा चीनी सहित अन्य विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रम की भी खूब माँग है।

## कैदियों का जेल में भविष्य-निर्माण

अपहरण और हत्या के आरोप में तिहाड़ जेल पहुँचने वाले ऐसे कैदियों को जो दोबारा एक सम्मानित जीवन जीने और आजीविका की उम्मीद खो चुके थे। लेकिन उनके इस सपने ने कैदियों के लिए इग्नू की निःशुल्क शिक्षा नामक पहल के साथ आकार लेना शुरू कर दिया। उन्होंने

इग्नू में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में प्रवेश लिया तथा कैदियों के लिए इग्नू की नि:शुल्क शिक्षा की बदौलत आज उनके हाथ में विभिन्न कम्पनियों के नियुक्ति पत्र हैं। बकौल कैदी, जब वह जेल पहुँचा, वह सदमे और तनाव में था। उसके लिए सब कुछ बर्बाद हो चुका था। लेकिन अब इस कैम्पस इंटरव्यू के कारण उसे आशा मिली कि जब वह यहाँ से बाहर जाएगा तो अपनी आजीविका आसानी से चला सकेगा। अन्य दूसरे कैदियों की भी यही कहानी है, जिन्हें एक नया जीवन मिला।

## कैदियों के लिए जीवन के नए अध्याय

2011 में तिहाड़ जेल में विभिन्न कम्पनियों ने इग्नू के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के 46 डिग्री धारकों का साक्षात्कार लिया, जिनमें से 40 को अकाउंटेंट्स, कम्प्यूटर आपॅरेटर्स, स्टोर मैनेजर, मार्केटिंग एंड फार्मास्यूटिकल सेल्स रिप्रजेंटेटिव्स के रूप में नियुक्ति पत्र मिला।

चयन हेतु तीन बातों का ध्यान रखा गया। पहला यह कि जेल के भीतर उनका आचरण अच्छा हो और उन्होंने अपने समय का सदुपयोग शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण लेने के लिए किया हो। दूसरा, उन्हें एक साल के भीतर अंतिम रूप से रिहा किया जाना हो और तीसरा, वे स्वयं अपना पुनर्वास और एक नई जिंदगी जीना चाहते हों। प्लेसमेंट कार्यक्रम ने कैदियों को भी आदर एवं सम्मान देने का संदेश दिया । यह कैदियों को दोबारा अपराध की दुनिया में लौटने से रोकेगा। जेल में उनका शैक्षणिक सशक्तीकरण उन्हें एक नया जीवन दे सकेगा। इस तरह की गतिविधियों से न केवल कैदियों का मनोबल बढ़ेगा, बल्कि दूसरे कैदी भी ऐसा करने के लिए प्रेरित होंगे। कैदियों को इग्नू ने आशा की एक नई किरण दी है।

### संदर्भ

इग्नू. 2013. *विद्यार्थी पुस्तिका एवं विवरणिका.* मैदान गढ़ी, नयी दिल्ली

कश्यप, सुभाष. 1992. *हमारा संविधान.* नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया. पृ. 102

पांडेय, रामशकल. 1997. भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ. पृ. 233

सिंह, राजेन्द्र पाल. *भारतीय आधुनिक शिक्षा.* वर्ष 9 तृतीय 1992, पृ. 46

### अंग्रेज़ी संदर्भ

Newsletter. A Biannual Publication. Vol. 17, Issue 45, Oct. 2007. IGNOU, New Delhi-68

OPENLETTER. A Biannual Publication. Vol. 13, Issue 3, March15, 2011, IGNOU, New Delhi-68

Singh, Bakshish. 'Distance Education– Experience of Open Universities– A Report. *University News*, Vol. 24 (6) 8 Feb. 1986